अध्याय द्वितीय
शोध – साहित्य

किसी भी अच्छे शोध कार्य के लिये पूर्ववर्ती शोध कार्यों का संदर्भ देना अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है । व्यावसायिक रूचि एवं आकांक्षा से संबंधित अब तक बहुत से शोध कार्य हो चुके हैं ।

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्ता ने शोध साहित्य को निम्न भागों में विभाजित कर अध्ययन किया है ।

1– गैर आदिवासी विधार्थियों पर हुए शोध कार्य

2– आदिवासी विधार्थियों पर हुए शोध कार्य

3– एम.एड. स्तर पर हुए शोधकार्य

गैर आदिवासी विधार्थियों पर हुए शोध कार्य

1. **बोहरा** (1977) ने व्यावसायिक चयन एवं बुद्धिमता, शैक्षिक अभिरूचि, व्यक्तित्व एवं शैक्षिक उपलब्धि में सहसंबंध पर शोध कार्य किया । यह अध्ययन पोलीटेक्निक के विधार्थियों पर किया गया । इस अध्ययन में स्वयं निर्मित प्रश्नावली का उपयोग किया । जिसके अंतर्गत व्यावसायिक चयन, बुद्धिमता, शैक्षिक अभिरूचि व्यक्तित्व एवं शैक्षिक उपलब्धि में कोई सह–संबंध नहीं पाया गया (सुदिष्ट, 1993, P.-13)

2. सिंह (1979) ने शहरी और ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की व्यवसायिक अभिलाषा से संबंधित मनोवैज्ञानिक और सामाजिक तथ्य पर आधारित एक अध्ययन किया । जिसमें स्वयं निर्मित प्रश्नावली का उपयोग किया गया । इस शोध कार्य में शोधकर्ता

ने पाया कि व्यावसायिक अभिलाषा के अंतर्गत शहरी और ग्रामीण क्षेत्र के विधार्थियों ने अलग अलग व्यवसायों को प्राथमिकता दी (पूर्वानुसार)

3. **गौतम** (1981) ने विधार्थियों के व्यावसायिक चयन तथा उनके अभिभावकों के व्यावसायिक परिपेक्षों का अध्ययन किया । इस शोध कार्य हेतु उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के अंतिम वर्ष के एवं हाईस्कूल के प्रथम वर्ष के 130 विधार्थियों का चयन किया । शोधकर्ता ने उपकरण के रूप में एक व्यावसायिक चयन सूची बनायी जिसमें अध्यापकों एवं छात्रों की सहायता से जानकारी प्राप्त की । इस अध्ययन में विधार्थियों के व्यावसायिक चयन तथा उनके अभिभावकों के व्यावसायिक परिपेक्ष के स्वरूप में सह संबंध पाया गया ।

4. **सानुखिया** (1984) ने असम राज्य में व्यावसायिक शिक्षा के उच्चतर माध्यमिक पाठ्यक्रम से संबंधित अपने अध्ययन में पाया कि छात्रों की व्यावसायिक रूचियाँ उनके निवास स्थान की भौगोलिक परिस्थितियों पर निर्भर करती है । अतः किसी भी क्षेत्र में व्यावसायिक पाठ्यक्रम छात्रों की योग्यता रूचि, भावी आवश्यकता, भौगोलिक परिस्थितियों एवं उस क्षेत्र में उपलब्ध कच्चे माल को ध्यान में रखते हुए निर्धारित करने चाहिये (सुदिष्ट, 1993, P.- 14).

5. **सिंह** (1980) ने दृष्टि बधित छात्र–छात्राओं के व्यावसायिक चयन का तुलनात्मक अध्ययन किया । इस अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया । न्यादर्श के रूप में दिल्ली के दो विशिष्ट विद्यालय के 30 दृष्टिहीन छात्र एवं 30 दृष्टिहीन छात्राओं को लिया जो कक्षा 9 से 12 में अध्ययनरत थे । इस अध्ययन में उन्होंने छात्र एवं छात्राओं के मध्य व्यावसायिक चयन में अंतर पाया (पूर्वानुसार)

6. **ओंकार** (1981) ने कक्षा 10 वीं के विधार्थियों की व्यावसायिक अभिलाषा का बुद्धिमता तथा

पालकों की शिक्षा एवं व्यवसाय के मध्य सह–संबंध का अध्ययन किया । उन्होंने इस अध्ययन में पाया कि जो विद्यार्थी अधिक बुद्धिमान है, उन्होंने उच्च प्रकार के व्यवसायों का चयन किया । जिन विद्यार्थियों के पिता उच्च शिक्षा प्राप्त थे वे विद्यार्थी अधिक बुद्धिमान थे । विधार्थियों की व्यावसायिक अभिलाषा एवं बुद्धिमता का उनके पिता की शिक्षा एवं व्यवसाय के मध्य राह संबंध पाया (खान, 1983, P. -16)

7. **चढ्ढ़ा** (1982) ने ग्रामीण एवं शहरी हाईस्कूल के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रूचि से संबंधित मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक तत्वों का अध्ययन किया । अध्ययन के लिये कक्षा 10 के 713 बालकों को नयादर्श के रूप में लिया गया यह विद्यार्थी चंडीगढ़ और रोपर जिले के 6 ग्रामीण विद्यालयों से चुने गए थे । इसमें जलोटा द्वारा निर्मित मानसिक योग्यता परीक्षण, धामी और दोसाज की सामाजिक आर्थिक स्तर परिसूची, सिंह एवं सिंह की सामंजस्य प्रश्नावली, व्यावसायिक आकांक्षा पत्र शोधकर्ता द्वारा उपयोग में लाये गये। व्यावसायिक आकांक्षा पत्र शोधकर्ता द्वारा स्वयं निर्मित किया गया । निष्कर्ष में 48% शहरी बालाकों की इंजीनियर बनने की आकांक्षा थी, 10% शहरी बालकों की स्वास्थ्य संबंधी व्यवसाय में जाने की आकांक्षा थी । जबकि ग्रामीण क्षेत्र के 12% छात्र इंजीनियर एवं 6% स्वास्थ्य संबंधी व्यवसाय में जाने की आकांक्षा रखते थे ।

आदिवासी विद्यार्थियों पर हुए शोध कार्य

1. **नाथन** (1971) ने उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत आदिवासी एवं गैर आदिवासी विद्यार्थियों की प्रेरणा से संबंधित उपलब्धि और शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन किया ।

न्यादर्श में असम के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत 294 लड़के और 89

लड़कियों को शामिल किया उपकरण में मेहता का प्रसंगात्मक बोध परीक्षण एवं शैक्षिक उपलब्धि के लिये हाई स्कूल प्रमाण पत्र का उपयोग किया गया ।

अध्ययन में पाया गया कि – (1) आदिवासी विद्यार्थियों ने गैर आदिवासी विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक nach अंक प्राप्त किये । ग्रामीण एवं गैर आदिवासी विद्यार्थियों की ग्रामीण आदिवासी विद्यार्थियों से अधिक nach थी । (2) ग्रामीण आदिवासी एवं गैर आदिवासी बालकों की nach में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया, जबकि शहरी आदिवासी एवं गैर आदिवासी बालकों की nach में अंतर पाया गया (शर्मा, 1994, P.-34)

2. **दुबे** (1974) ने असम के आदिवासी एवं गैर आदिवासी महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की व्यावसायिक और शैक्षिक आकांक्षा का अध्ययन किया । अध्ययन से यह निष्कर्ष निकला कि आदिवासी एवं गैर आदिवासी विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा एवं शैक्षिक आकांक्षा में कोई अंतर नहीं है (शर्मा, 1993, P. -15)

3. **शर्मा** (1979) ने आदिवासी विकास का सैद्धांतिक विवेचन, भोपाल ग्रंथ अकादमी ने अपने अध्ययन में पाया कि अबुझमाड़ में साक्षरता का प्रतिशत बहुत कम है । अधिकतर आदिवासियों की बोली भौंड़ी है । शैक्षिक विकास की आवश्यकता है । यहाँ अलग अलग पाठशालाओं के विद्यार्थियों के लिये गैर स्कूली किशोर एवं किशोरियों तथा प्रोढ़ों के लिये अलग अलग पाठ्यक्रम निर्माण की आवश्यकता है । ताकि पाँच वर्ष में साक्षरता का प्रतिशत 10 हो जाय । शिक्षा प्रदान करने के लिये घोटुल का भी उपयोग किया जा सकता है । गाँवों में एक शाला संगम की स्थापना की जाय जिनको नागरिक शिक्षा और सामान्य शिक्षा की जिम्मेदारी सौंपी जाय ।

4. **श्रीवास्तव** (1983) ने मिर्जापुर के आदिवासी विद्यार्थियों पर अध्ययन किया जिसमें उच्चजाति के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रूचि 13 व्यवसायों तक सीमित थी, जबकि पिछड़े एवं आदिवासी विद्यार्थियों की व्यावसायिक रूचि 9 व्यवसायों तक सीमित थी । आदिवासी एवं गैर आदिवासी विद्यार्थियों की व्यावसायिक रूचि में कोई अंतर नहीं पाया गया (शर्मा, 1994, पेज–30)

5. **चंद** (1985) ने तीन नागा आदिवासी जाति ए.ओ., अगासी और सेमा आदिवासी विद्यार्थियों का तुलनात्मक अध्ययन किया । अध्ययन का उद्देश्य इन जातियों के विद्यार्थियों का उनके आत्मबोध सामाजिक आर्थिक स्तर, व्यावसायिक एवं शैक्षिक आकांक्षा और शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना था । इस अध्ययन में सेमा विद्यार्थियों की व्यावसायिक रूचि में अंतर पाया गया जबकि सेमा एवं ए.ओं. विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा में भिन्नता थी । जबकि सेमा जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा और अगासी जनजाति की शैक्षिक आकांक्षा में समानता पायी गयी एवं उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर के और निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर के अगासी विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा में सार्थक अंतर पाया गया । जबकि उच्च एवं मध्यम सामाजिक आर्थिक स्तर के अगासी विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा में समानता थी । उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर के ए.ओ. जनजातीय विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा निम्न एवं मध्यम सामाजिक आर्थिक स्तर के ए.ओ. विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा से भिन्न थी । उच्च, मध्यम एवं निम्न सामाजिक सामाजिक आर्थिक स्तर के सेमा विद्यार्थियों में शैक्षिक आकांक्षा के संदर्भ में कोई अंतर नहीं था ।

6. **अभीरंजन** (1987) ने आदिवासी गैर आदिवासी बी.एससी. (कृषि) में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन शोध में बी.एससी. (कृषि) में अध्ययनरत्

आदिवासी एवं गैर आदिवासी विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा में सार्थक अंतर पाया गया । एवं आदिवासी विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा गैर आदिवासी विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा से कम थी (शर्मा, 1994, P.-28).

7. **जैन एवं चंदेल (1987)** ने वाणिज्य विषय के सामान्य एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आंकाक्षाओं का तुलनात्मक अध्ययन किया । इस अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया । न्यादर्श में अजमेर के तीन राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के 11 वीं कक्षा के 50 अनुसूचित जाति के एवं 50 सामान्य जाति के छात्रों को लिया गया ।

अध्ययन में व्यावसायिक आकांक्षा प्रश्नावली का प्रयोग किया इस प्रश्नावली के दो भाग थे, प्रथम भाग व्यक्तिगत सूचनाओं एवं दूसरा विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षाओं से संबंधित प्रश्नों का था ।

इसमें सामान्य जाति के छात्रों की व्यावसायिक आकांक्षाऐं उच्च आय एवं सामाजिक प्रतिष्ठा से युक्त तथा वाणिज्य से संबंधित व्यवसायों की ओर थी, जबकि अनुसूचित जाति के छात्रों की व्यावसायिक आकांक्षाएं मध्यम आय एवं सामाजिक प्रतिष्ठा से युक्त एवं वाणिज्य से अप्रत्यक्ष रूप से संबंधित व्यवसायों की थी ।

सामान्य जाति के सर्वाधिक 24% छात्रों द्वारा चार्टड एकाउन्टस व्यवसाय को पसंद किया गया, जबकि अनुसूचित जाति के 12.12% छात्रों ने बैंक मैनेजर तथा पुलिस इंस्पेक्टर व्यवसाय को पसंद किया ।

दोनों ही समूहों की वास्तविक व्यावसायिक आकांक्षा सामान्य स्तर पर अधिक थी साथ ही निम्न स्तरीय आकांक्षाओं में अनुसूचित जाति के छात्रों का प्रतिशत 22 था जबकि सामान्य छात्रों का प्रतिशत 30 था (सच्चिदानंद, 1989)

8. **मेहता, भटनागर, जैन** (1993) ने शिलांग (मेघालय) के हाईस्कूल में अध्ययनरत आदिवासी विद्यार्थियों के घर की पृष्ठभूमि चुनिंदा मनोवैज्ञानिक, शैक्षिक उपलब्धि, शैक्षिक व्यावसायिक योजना चरों का अध्ययन किया । इस अध्ययन के उद्देश्य मेघालय के शिक्षा विभाग एवं शिक्षाविदों को विद्यालयों में आवश्यक निर्देशन सेवा एवं उसकी प्रकृति से अवगत कराना था, ताकि निर्देशन सेवाओं की योजना बनाने में सहायता मिले एवं दूसरा उद्देश्य हाई स्कूल के विद्यार्थियों के शैक्षिक और व्यावसायिक विकास में मनोवैज्ञानिक और वातावरणीय चरों की भूमिका का अध्ययन करना था । अध्ययन में विद्यार्थी सूचना पत्र, शैक्षिक योजना प्रश्नावली, सेंटर का कार्य मूल्यकार्ड, रेवेन का स्टेंडर्ड प्रोग्रेसिव मेट्रिसिस, रूचि प्रश्नावली एवं कक्षा आठवीं की अंक सूची का उपयोग किया गया ।

इस अध्ययन में आदिवासी एवं गैर आदिवासी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, बौद्धिक क्षमता, व्यावसायिक योजना चरों में अंतर पाया गया

व्यावसायिक रूचि से संबंधित एम.एड. स्तर पर हुए शोध कार्य

1. **वर्मा** (1991) ने विकलांग एवं सामान्य विद्यार्थियों के मानसिक कार्य निष्पादन एवं व्यावसायिक इच्छा पर शोध कार्य किया । न्यादर्श के लिये भोपाल के 3 विद्यालयों के 50 सामान्य विद्यार्थी तथा 7 विद्यालयों के 50 विकलांग विद्यार्थियों को चुना । मानसिक योग्यता परिक्षण डा.एस.एस. जलोटा तथा डा. जे.एस. ग्रेवाल की व्यावसायिक आकांक्षा मापनी का उपयोग किया । इस अध्ययन में सामान्य विद्यार्थियों के मानसिक कार्य निष्पादन एवं व्यावसायिक रूचि में कोई संबंध नहीं पाया गया, जबकि विकलांग विद्यार्थियों के कार्य निष्पादन एवं व्यावसायिक रूचि में सह संबंध पाया गया ।

2. **राजुरकर** (1993) ने कक्षा 11 वीं एवं 12 वीं के छात्र छात्राओं की मानसिक योग्यता एवं व्यावसायिक रूचि का अध्ययन किया । न्यादर्श में कला एवं विज्ञान संकाय के 200 छात्र छात्राओं को चुना । मानसिक योग्यता परीक्षण के लिये डा. एस.एस. जलोटा के परीक्षण का उपयोग किया तथा व्यावसायिक रूचि मापन एस.पी. कुलश्रेष्ठ के प्रपत्र का उपयोग किया यह अध्ययन सर्वेक्षण विधि से किया गया । अध्ययन के निष्कर्ष थे, कि छात्र छात्राओं की वाणिज्य संबंधी व्यावसायिक रूचि में कोई अंतर नहीं है, एवं दोनों संकाय के छात्र छात्राओं की मानसिक योग्यता समान थी ।

3. **शर्मा** (1993) ने नगरीय एवं उपनगरीय क्षेत्रों में अध्ययनरत बालिकाओं की मानसिक योग्यता एवं व्यावसायिक रूचि का तुलनात्मक अध्ययन किया शोध कार्य में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया । कुल न्यादर्श की संख्या 120 थी, जिसमें नगरीय पाठशालाओं के कक्षा 9 से 12 वीं में अध्ययनरत 60 बालिकाओं तथा उपनगरीय क्षेत्र की 60 बालिकाओं को सम्मिलित किया गया । डा. एस.एस. जलोटा का मानसिक योग्यता परीक्षण तथा एस.पी. कुलश्रेष्ठ का व्यावसायिक रूचि परीक्षण का उपयोग किया । इस अध्ययन में नगरीय एवं उपनगरीय छात्राओं की मानसिक योग्यता में सार्थक अंतर पाया गया जबकि व्यावसायिक रूचि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया ।

4. **सुदिष्ट** (1993) ने बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की भविष्य योजनाओं का अध्ययन किया । इस अध्ययन में विद्यार्थियों की भविष्य योजनाओं का अध्ययन किया । इस अध्ययन में विद्यार्थियों की व्यावसायिक रूचि का भी अध्ययन किया । प्रतिदर्श के रूप में क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, भोपाल के 105 बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों का चयन किया गया । सर्वेक्षण विधि का उपयोग करते हुए उपलब्धि अभिप्रेरणा के लिए मेहता का प्रयोग एवं बुद्धिमापन के लिये कल्चर फेयर

परीक्षण, सामाजिक आर्थिक स्तर बी. कुप्पूस्वामी तथा स्वयं निर्मित भविष्य योजना प्रश्नावली का उपयोग किया । इस अध्ययन में शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की भविष्य योजना एवं व्यावसायिक रूचि में अंतर पाया गया ।

* * * * *